रमेशचंद्र महरोत्रा का भाषिक एवं साहित्यिक अवदान

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)
के कला संकाय के अंतर्गत हिंदी विषय में पी–एच.डी.
उपाधि के पंजीयन हेतु प्रस्तुत
शोध–प्रबंध की रूपरेखा
सत्रः 2015–16

शोध–निर्देषक

डॉ0 सुधीर शर्मा

विभागाध्यक्ष (हिंदी)

कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय

भिलाई नगर जिला–दुर्ग (छ.ग.)

शोधार्थी

अमित कुमार पटेल

कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय

भिलाई नगर जिला–दुर्ग (छ.ग.)

शोध–केन्द्र

कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय

भिलाई–नगर, जिला दुर्ग (छ.ग.)

रमेशचंद्र महरोत्रा का भाषिक एवं साहित्यिक अवदान

प्रस्तावना –

डॉ. रमेशचंद्र महरोत्रा प्रख्यात् भाषाविद् एवं प्रमुख श्रेष्ठ हिंदी साहित्यकार थे , जिन्होंने अपनी विद्वता एवं प्रतिभा से भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में एक अतुलनीय योगदान दिया है । डॉ. महरोत्रा ने अपनी विभिन्न पुस्तकों, निबंधों एवं पत्रिकाओं में अनेक विधाओं से भाषाविज्ञान एवं हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है । अत्यंत सुगम ढंग से रचित पुस्तकों का प्रणयन किया गया है । भाषाविज्ञान के क्षेत्र में उनका स्थान श्रेष्ठ है और उनका सामाजिक क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है । उनमें से निःशुल्क विधवा–विवाह केंद्र बहुत ही सराहनीय एवं प्रशंसनीय रहा है, जिसकी स्थापना 11.01.1992 की गई जिसमें विगत वर्षों में 183 विधवाओं ने पंजीयन करवाया जिनमें 63 का विवाह हो चुका है । उन जैसे लोगों के द्वारा ही समाज को एक नई दिशा मिली है । वे शरीर–दान करने वाले प्रथम रचनाकार हैं । वे रूढ़िवादी परंपरा से हटकर शरीर–दान का संकल्प लिया और उनसे ही प्रेरणा प्राप्त कर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती उमा महरोत्रा ने भी अपने शरीरदान की विधिवत घोषणा कर मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में प्रथम महिला होने का गौरव हासिल किया ।

उनके निबंधों और रचनाओं में नवीनता एवं मौलिकता के अतिरिक्त समाज उपयोगी और विचारणीय हैं । वे उन रचनाकारों में से थे, जो सहज और स्वाभाविक रूप से अपने हृदय को ही मानो विभिन्न रचनाओं के रूप में पाठकों को सामने प्रस्तुत कर दिया है । यही कारण है कि पाठक उनकी रचनाओं को पढ़ते–पढ़ते आत्मविभोर एवं आत्मविस्मृत हो जाते हैं।

रचनाओं में सूक्ष्म चिंतन, विचार तथा सुलझे हुए गहन निर्देशन, रचनाशैली, एवं स्पष्ट नियम, आदि सर्वश्रेष्ठ हैं । डॉ. महरोत्रा प्रख्यात भाषाविज्ञानी तो थे ही साथ में साहित्यकार भी थे । उनकी प्रेरणादायी रचनाओं एवं निबंधों को पढ़कर मानव मन में कुछ करने की ललक पैदा होती है । व्यापक उद्देश्य अभिव्यक्ति के लिए भाषा–शैली का महत्व तो छोटी–छोटी बातों की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करना उन्हें प्रेरणा एवं दिशा देना, उनकी रचनाओं की महती खासियत है । उनके पास दूरदृष्टि, क्षमता, जीवनबोध और भाषा सभी कुछ का भाषा संबंधी बारीकियां थी जो उनकी रचनाओं में देखने को मिलता है।

रचनाओं को पढ़ने से पाठक को जो आनंद की अनुभूति प्राप्त होती है, उसे शब्दों में बया कर देना मुमकिन नहीं है । भाषा में पकड़ एवं भाषा का ज्ञान सर्वोपरि है । डॉ. महरोत्रा की पहली रचना भाषैषणा (1968) प्रकाशित हुई जो भाषा–शास्त्र के क्षेत्र में प्रवेश करने वालों के लिए वरदानस्वरूप है । वे शब्द साधक एवं अर्थ–गंभीर्य के विवेचक थे। उनकी रचनाएँ सही जीवन की राह दिखाने वाली, पथभ्रष्ट हो गए मानव समाज को सही जीवन दृष्टि देने वाली, अच्छा बनने की प्रेरणा देने वाली हैं । सफलता के रहस्य एवं सुख की राहें ऐसे हितोपदेश हैं जिनका अनुशीलन आज के भटके समाज की बुद्धि–शुद्धि करता है । उनकी भाषाशैली और तथ्यों के प्रति पाठक बरबस आकृष्ट हो जाता है । अपने पूरे जीवन के अनुभवों का सार अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया है । डॉ. महरोत्रा की उपर्युक्त विशेषताएँ एवं उनकी रचनाओं में भाषा की बारीकियॉ, व्याकरण, सरल एवं स्पष्ट शब्दावली सीधे पाठक के ह्रदय को छू जाती है।

हिंदी के एकमेय राष्ट्रीय रूप की प्राप्ति, लक्ष्य के रूप में तो सही है पर उसकी व्यवहार में स्थापना संभव नहीं है । हिंदी भाषा का क्षेत्र इतना विस्तृत है कि हम मानक हिंदी पर क्षेत्रीय प्रभावों से संबंधित न जाने कितनी अशुद्धियॉ करते हैं और कितने ही तथ्यों से अवगत नहीं है । इन सभी समस्याओं का समाधान उनकी रचनाओं में मिलता है । उनकी रचनाएँ साक्षात्कार की राह बताती है । अपनी राह स्वयं तलाशिये और उस राह के दीपक भी स्वयं बनिए । उनकी रचनाएँ हिन्दी में जीवन मूल्य और सुख की प्राप्ति पर केंद्रित हैं । रचनाओं में साहित्य का मूल धर्म यही है कि पाठक कम से कम एक बार यह कहने के लिए बाध्य हो जाए की जीवन जीने की सही राह दिखाने की यही पुस्तक है। मानव मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है । डॉ. महरोत्रा की रचनाएँ कभी भी मानव मूल्यों से समझौता नहीं करतीं बल्कि समकालीन यथार्थ को सामने रखकर संघर्ष एवं परिश्रम करने की प्रेरणा देती हैं । उनका कृतित्व एवं व्यक्तित्व रचनात्मक बहुआयामी और प्रेरणादायक है । साहित्यिक क्षेत्र में मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों ही रूप में चर्चा करना आवश्यक होता है । सामाजिक पृष्ठभूमि की तलाश में आधुनिकता का दौर महत्वपूर्ण है। वास्तव में आधुनिकता एक व्यापक दृष्टिकोण है । आधुनिक सोच एवं आधुनिकता ने समाज को अपनी सामंती सोच बदलने पर विवश कर दिया है। आधुनिकता ने वैज्ञानिक दृष्टि पैदा की ; तर्क शक्ति का विकास किया ; तथा तथ्यों को सत्य की कसौटी पर कसने के उपरांत ही स्वीकारने की प्रवृत्ति पर बल दिया।

शोध की सीमाएँ :

इस शोध–कार्य में डॉ. रमेशचंद्र महरोत्रा की प्रमुख पुस्तकों को लेना प्रस्तावित है । उनकी निम्नलिखित पुस्तकों को शामिल किया जाना है –

1. भाषैषणा (1968)
2. अशुद्ध हिंदी (2000)
3. हिंदी में अशुद्धियॉ (1983)
4. मानक हिंदी का शुद्धिपरक व्याकरण (1988) पु. (1992)
5. हिंदी का शुद्ध प्रयोग (1992)
6. मानक हिंदी का शुद्ध प्रयोग –1 (1996)
7. मानक हिंदी का शुद्ध प्रयोग –2 (2000)
8. मानक हिंदी का शुद्ध प्रयोग –3 (2000)
9. मानक हिंदी का शुद्ध प्रयोग –4 (2000)
10. आड़ी–टेढ़ी बात (2003)
11. सुख की राहें (2000)
12. सफलता के रहस्य (2000)
13. लवशाला (1997)
14. छत्तीसगढ़ी–शब्दकोश (1982)
15. छत्तीसगढ़ी–मुहावरा–कोश (1991)
16. छत्तीसगढ़ और छत्तीसगढ़ी (1993)
17. मानक छत्तीसगढ़ी का सुलभ व्याकरण (2002)
18. छत्तीसगढ़ी लेखन का मानकीकरण (2002)
19. तमिल भाषा का इतिहास (1974)

पूर्व शोध–कार्य की समीक्षा :

डॉ. रमेशचंद्र महरोत्रा के लेखकीय योगदान पर यह प्रथम शोध कार्य है ।

शोध–कार्य का उद्देष्य एवं महत्व :

उद्देष्य : प्रस्तुत शोध–शीर्षक 'रमेशचंद्र महरोत्रा का भाषिक एवं साहित्यिक अवदान' को गहन अध्ययन का विषय बनाकर उसके आंतरिक साक्ष्यों के आधार पर डॉ. रमेशचंद्र महरोत्रा की कृतियों एवं निबंधों का विवेचन करके वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनके साहित्यिक महत्व को रेखांकित करने का उद्देश्य निहित है । साथ–ही–साथ उनके साहित्य में सामाजिक दृष्टिकोण, भाषिक दृष्टिकोण, शैक्षिक दृष्टिकोण, एवं राष्ट्रीय दृष्टिकोण क्या है ? उसे अपने इस शोध के माध्यम से समाज के सम्मुख लाना है । उन्होंने साहित्य के माध्यम से समाज की समस्याओं को चिन्हित कर समाज में जो सुधारात्मक पहल की, उसका मूल्यांकन करना है । प्रस्तुत शोध–कार्य के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

1. हिंदी साहित्य एवं भाषा विज्ञान के क्षेत्र में डॉ. महरोत्रा के प्रभाव का मूल्यांकन ।
2. आधुनिक शिक्षा के प्रसार से बदलता समाज एवं हिंदी साहित्य तथा तद्विषयक डॉ. महरोत्रा के विचारों का अध्ययन ।
3. राष्ट्रीय एवं सामाजिक परिवेश में डॉ. महरोत्रा की विचारधारा का प्रभाव लक्षित करना ।
4. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में साहित्य की कल्याण की भावना तथा इसमें डॉ. महरोत्रा के विचारधारा की आवश्यकता, उपयोगिता, एवं महत्व ।
5. डॉ. महरोत्रा की रचनाओं एवं निबंधों में नवीनता एवं मौलिकता के अतिरिक्त समाज उपयोगिता का मूल्यांकन ।
6. हिंदी साहित्य एवं भाषा विज्ञान को समृद्ध बनाने में डॉ. महरोत्रा के योगदान का अध्ययन ।

शोध–कार्य का महत्व :

डॉ. रमेशचंद्र महरोत्रा प्रख्यात भाषाविद एवं प्रमुख श्रेष्ठ हिंदी साहित्यकार थे । भारत सरकार की हिंदी साहित्यकार विवरणी में छत्तीसगढ़ के केवल दो लेखकों और हिंदी प्रचारकों में से एक रहे हैं । डॉ. महरोत्रा को हिंदी अकादमी, हैदराबाद ने 1996 में 'शब्द सम्राट' की उपाधि से नवाजा था । डॉ. महरोत्रा ने अपनी रचनाओं में भाषाविज्ञान जैसे दुरूह विषय के कई अनछुए पहलुओं को उद्घाटित किया । शब्दों का सही प्रयोग एवं सरल भाषाशैली में अभिव्यक्त कर अपनी गहरी पकड़ का परिचय दिया । डॉ महरोत्रा की लेखनी में हमेशा शब्दों को नया जीवन एवं रचनात्मक लेखन से लेकर प्रेरणास्पद निबंध ओर भाषाविज्ञान से लेकर व्याकरण तक लेखन की अनेक छवियॉ देखी जा सकती हैं । छत्तीसगढवासियों के विशेष संदर्भ में आंचलिकता के प्रभाव की दृष्टि से हिंदी प्रयोग की अशुद्धियों को उन्होंने अनेक बार भली–भांति समझकर शुद्ध हिंदी बोलने लिखने की प्रेरणा दी । मिलते–जुलते शब्दों के अर्थ व प्रयोग के महीन अंतर को सधी हुई सुंदर शैली में समझाकर आपने हिंदी शब्द संसार के मानक और प्रमाणिक अनुप्रयोग को बल दिया । डॉ महरोत्रा अनेक भाषाओं के ज्ञाता ही नहीं विशेषज्ञ थे । अपने विचारों से हिंदी जगत एवं व्याकरण में एक नयी क्रांति प्रदान की । जहॉ तक प्रकाशित लेख एवं संदर्भिका का प्रश्न है इनकी संख्या दो सौ के आस–पास है । उनके निर्देशन में पूर्ण करवाए गए शोध–कार्य तो स्मरणीय हैं ही उपाधिधारी भी नामचीन व्यक्तित्व हैं । मिसाल के तौर पर डॉ. महरोत्रा के निर्देशन में डी. लिट् करने वाले में स्वनामधन्य डॉ विनय कुमार पाठक, डॉ चितरंजन कर, डॉ यज्ञ प्रसाद तिवारी शामिल हैं । उन्होंने 39 पी–एच.डी. एवं 6 परियोजनाऍ संपादित की हैं ।

उन्हें राष्ट्रीय स्तर से लेकर प्रादेशिक स्तर और क्षेत्रीय स्तर तक के दस से अधिक अलंकरण एवं सम्मान प्राप्त हुए । केंद्र सरकार एवं राज्य सरकार के दो दर्जन आयोगों और परिषदों आदि अन्य विस्तृत अध्ययन का विषय बनाकर उनके निबंध रचनाओं का विवेचना किया जाना प्रस्तावित है ।

इस शोध–कार्य का महत्व यह है कि शोध के निष्कर्षो से डॉ. रमेशचंद्र महरोत्रा के भाषिक एवं साहित्यिक अवदान समग्र रूप पाठकों और अनुसंधानकर्ताओं को उपलब्ध हो सकेगा । साथ ही लेखन में शुद्धता की परंपरा का विकास हो सकेगा ।

शोध–कार्य की अनुसंधान–प्रविधि :

प्रस्तावित शोध–कार्य हेतु निम्नलिखित अनुसंधान प्रविधियों का प्रयोग किया जाना प्रस्तावित है :–

1. चयनित हिंदी साहित्य एवं साहित्यकारों पर विश्लेषणात्मक अनुसंधान प्रस्तावित ।
2. देश एवं राज्य के महत्वपूर्ण ग्रंथालयों में उपलब्ध ग्रंथों, शोध–ग्रंथों, एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री का अन्वेषण ।
3. वेबसाईट, ब्लाग इत्यादि में उपलब्ध संबंधित सामग्री का अन्वेषण ।
4. डॉ. महरोत्रा के प्रमुख रचनाओं में साहित्यक एवं भाषिक अवदान की पड़ताल ।
5. विभिन्न समाचार पत्रों में लेखक एवं उनकी संरचनाओं के संबंध में प्रकाशित आलेखों का अन्वेषण ।
6. अन्य प्रणाली जिसकी समय पर आवश्यकता परिलक्षित हो ।

प्रस्तावित शोध–कार्य का संभावित निष्कर्ष :

प्रस्तुत शोधकार्य के पूर्ण होने पर यह परिणाम होने की संभावना है कि डॉ. रमेशचंद्र महरोत्रा के रचनाओं में नवीनता मौलिकता तथा भाषा का अद्वितीय योगदान है । विभिन्न रचनाओं एवं निबंधों में डॉ. महरोत्रा के राष्ट्रीय एवं सामाजिक चिंतन की विचारधारा के प्रभाव के अनुशीलन पर आधारित है । पूर्व में उन पर कोई गंभीर कार्य नहीं किया गया है । इनकी उपलब्ध रचनाओं के आधार पर यह स्पष्ट है कि वे भाषा एवं हिंदी साहित्य के रचनाकारों में से कुशल रचनाकार एवं भाषाविद रहे हैं । उनकी रचनाओं में राष्ट्रीय एवं सामाजिक विचारधारा के स्पष्ट प्रभाव दिखते हैं ।

इस शोध–कार्य के माध्यम से यह भी ज्ञात हो जाएगा कि इनकी रचनाओं से हिंदी साहित्य, व्याकरण, और भाषा के माध्यम से कितना येागदान किया है और पाठकों पर क्या प्रभाव लक्षित हुआ । साहित्य के विविध आयामों में इन्होंने हिंदी साहित्य को महत्वपूर्ण योगदान दिया है लेकिन इनके साहित्य की आज तक मूल्यांकन नहीं हुआ है। इस शोध–कार्य के माध्यम से समग्र रचनाओं का अध्ययन कर समग्र साहित्य और साहित्यकारों के मध्य उनके स्थान, दशा, और दिशा को निबंध के रूप में प्राप्त करना इस शोध का प्रमुख उद्देश्य है ।

प्रस्तावित शोध–कार्य में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होने की संभावना है :–

1. डॉ. महरोत्रा की रचनाओं में साहित्य एवं भाषा का प्रभाव ।
2. हिंदी भाषा एवं छत्तीसगढी भाषा को समृद्ध बनाने में डॉ. महरोत्रा के रचनाओं का योगदान ।
3. साहित्य एवं भाषा में आधुनिकता का आग्रह जिसमें डॉ. महरोत्रा की विचारधारा अग्रिम स्थान में है ।
4. डॉ. महरोत्रा की रचनाओं में सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक परिदृश्यों का मूल्यांकन ।
5. विचार, दर्शन, परिवेश, एवं साहित्य के तार्किक संबंध की स्थापना एवं डॉ. महरोत्रा का स्थान ।
6. डॉ. महरोत्रा की रचनाओं में साहित्य एवं भाषा जगत में महत्व ।
7. डॉ. महरोत्रा की रचनाओं मे राष्ट्र एवं समाज मे युवाओं के लिए जीवन संघर्ष की प्रेरणा का मूल्यांकन ।
8. डॉ. महरोत्रा की रचनाओं में राष्ट्रीय एवं सामाजिक परिवेश और वातावरण का मूल्यांकन।

रमेशचंद्र महरोत्रा का भाषिक एवं साहित्यिक अवदान

शोध–प्रारूप

प्रथम अध्याय : परिचय

1.1 शोध–कार्य की प्रस्तावना

1.2 शोध–कार्य की सीमा एवं प्रविधि

1.3 शोध–कार्य का उद्‌देश्य

1.4 शोध–परिकल्पना

1.5 रमेशचंद्र महरोत्रा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.6 रचना–संसार

1.7 भाषिक अवदान

1.8 साहित्यिक अवदान

1.9 सामाजिक एवं अकादमिक अवदान

द्वितीय अध्याय : रमेशचंद्र महरोत्रा का भाषिक अवदान

2.1 भाषाविज्ञान और रमेशचंद्र महरोत्रा

2.2 हिंदी व्याकरण के क्षेत्र में योगदान

2.3 अशुद्ध विश्लेषण एवं वर्तनी के क्षेत्र में योगदान

2.4 हिंदी में अशुद्धियाँ' ग्रंथ का वैशिष्ट्य एवं मूल्यांकन

2.5 'मानक हिंदी के शुद्ध प्रयोग' खंड 1–4 का मूल्यांकन

2.6 संपादित शब्दकोशों का मूल्यांकन

2.7 अन्य भाषिक लेखों/ग्रंथों का मूल्यांकन

2.8 भाषिक अवदान का मूल्यांकन

तृतीय अध्याय : रमेशचंद्र महरोत्रा का साहित्यिक अवदान

3.1 प्रारंभिक साहित्यिक लेखों का परिचयात्मक अध्ययन

3.2 निबंध–संग्रह 'सफलता के रहस्य' का समीक्षात्मक अध्ययन

3.3 निबंध–संग्रह 'सुख की राहें' का समीक्षात्मक अध्ययन

3.4 प्रेरक निबंधों और चिंतन साहित्य का अध्ययन

3.5 व्यंग्य साहित्य का अध्ययन

3.6 व्यंग्य संग्रह 'आड़ी–टेढ़ी' बात का समीक्षात्मक एवं शैलीवैज्ञानिक अध्ययन

3.7 पद्य साहित्य का परिचयात्मक अध्ययन

3.8 काव्य–संग्रह 'लवशाला' का समीक्षात्मक अध्ययन

3.9 अन्य समीक्षात्मक आलेख / भूमिका लेखन आदि का अध्ययन

चतुर्थ अध्याय : छत्तीसगढ़ी भाषा–साहित्य के विकास में रमेशचंद्र महरोत्रा का अवदान

4.1 छत्तीसगढ़ी एवं अन्य बोलियों के क्षेत्र में योगदान

4.2 छत्तीसगढ़ी व्याकरण के लेखन में योगदान

4.3 छत्तीसगढ़ी शब्द–कोश एवं मुहावरा–कोश का मूल्यांकन

4.4 छत्तीसगढ़ी का मानकीकरण में योगदान

4.5 छत्तीसगढ़ी एवं अन्य बोलियों पर केंद्रित निबंधों का मूल्यांकन

पंचम अध्याय :

रमेशचंद्र महरोत्रा का भाषिक एवं साहित्यिक अवदान का मूल्यांकन

उपसंहार

परिषिष्ट :

आधार–ग्रंथ–सूची

संदर्भ–ग्रंथ–सूची

पत्र–पत्रिकाएँ

वेबसाइट

परिषिष्ट :

आधार–ग्रंथ–सूची :

1. महरोत्रा, रमेशचंद्र. भाषैषणा. रायपुर : अरोरा प्रकाशन, 1968.
2. महरोत्रा, रमेशचंद्र. अशुद्ध हिंदी. रायपुर : भाषिका प्रकाशन, 1980.
3. महरोत्रा, रमेशचंद्र. हिन्दी में अशुद्धियॉ. दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन, पहली आवृत्ति : 2000, दूसरी आवृत्ति : 2001.
4. महरोत्रा, रमेशचंद्र. मानक हिन्दी का शुद्धिपरक व्याकरण. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, – (1988) पु. (1992).
5. महरोत्रा, रमेशचंद्र. हिन्दी के शुद्ध प्रयोग. रायपुर : ओउम् प्रकाशन : 1992.
6. महरोत्रा, रमेशचंद्र. मानक हिन्दी के शुद्ध प्रयोग –1. दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन संस्करण : 1996.
7. महरोत्रा, रमेशचंद्र. मानक हिन्दी के शुद्ध प्रयोग –2. दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन आवृत्ति : 2000.
8. महरोत्रा, रमेशचंद्र. मानक हिन्दी के शुद्ध प्रयोग –3. दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन आवृत्ति : 2000.
9. महरोत्रा, रमेशचंद्र. मानक हिन्दी के शुद्ध प्रयोग –4. दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन आवृत्ति : 2000.
10. महरोत्रा, रमेशचंद्र. सफलता के रहस्य. नई दिल्ली : प्रभात प्रकाशन, 2013.
11. महरोत्रा, रमेशचंद्र. सुख की राहें. दिल्ली : ज्ञान गंगा प्रकाशन , 2000.
12. महरोत्रा, रमेशचंद्र. आड़ी–टेढ़ी बात. नई दिल्ली : विद्या विहार प्रकाशन 2003.
13. महरोत्रा, रमेशचंद्र. लवशाला. रायपुर : महेश प्रकाशन, 1997.
14. महरोत्रा, रमेशचंद्र. छत्तीसगढ़ी–शब्दकोश. रायपुर : भाषिका प्रकाशन 1982.
15. महरोत्रा, रमेशचंद्र. छत्तीसगढ़–मुहावरा–कोश. नई दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1991.
16. महरोत्रा, रमेशचंद्र. छत्तीसगढ़ और छत्तीसगढ़ी. रायपुर : पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, 1993.
17. महरोत्रा, रमेशचंद्र. मानक छत्तीसगढ़ी का सुलभ व्याकरण. छत्तीसगढ़ भाषा प्रचार समिति, 2002.
18. महरोत्रा, रमेशचंद्र. छत्तीसगढ़ लेखन का मानकीकरण. रायपुर : वैभव प्रकाशन, 2002.
19. महरोत्रा, रमेशचंद्र. तमिल भाषा का इतिहास. भोपालः मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, 1974.

सन्दर्भ–ग्रंथ–सूची :

1. महरोत्रा, रमेशचंद्र. हिन्दी का नवीनतम बीज व्याकरण. रायपुर : पहचान प्रकाशन, (1986).
2. महरोत्रा, रमेशचंद्र. मानक हिन्दी का व्यवहारपरक व्याकरण. नई दिल्लीः राधाकृष्ण प्रकाशन, (2005).
3. महरोत्रा, रमेशचंद्र. मानक हिन्दी लेखन नियमावली. रायपुरः निःशुल्क वितरण प्रकाश, (1995).
4. महरोत्रा, रमेशचंद्र. अपनी हिन्दी सुदृढ़ कीजिए. रायपुर : वैभव प्रकाशन, (2003).
5. महरोत्रा, रमेशचंद्र. छत्तीसगढ़ी परिचय और प्रतिमान. रायपुर : वैभव प्रकाशन, (2002).
6. महरोत्रा, रमेशचंद्र. छत्तीसगढ़ी मुहावरे और लोकोक्तियॉ. दिल्लीः साहित्य प्रकाशन, (2002).
7. महरोत्रा, रमेशचंद्र. प्रचार के बिना मोक्ष नही मिलता. रायपुर : शोध एवं अनुसंधान केंद्र , (1998).
8. महरोत्रा, रमेशचंद्र. अपने 67वें जन्मदिन पर मैं और मेरे लिए छह फुट .जमीन. रायपुर : शोध एवं अनुसंधान केंद्र , (2000).
9. महरोत्रा, रमेशचंद्र. 67 से 68 आप ही के शब्दों में कुछ और. रायपुर : वैभव प्रकाशन, (2001).
10. महरोत्रा, रमेशचंद्र. प्रचार के बिना मोक्ष नहीं मिलता. रायपुर : शोध एवं अनुसंधान केंद्र , (1998).

पत्र–पत्रिकाएँ

1. हंस, मासिक, संपादक : राजेन्द्र यादव, नई दिल्ली
2. विवेक–ज्योति, राधाकृष्ण आश्रम, रायपुर
3. राष्ट्रबंधु , रायपुर
4. देशबन्धु , रायपुर
5. साहित्य अमृत, नई दिल्ली
6. साहित्य संदेश , आगरा
7. गवेषणा, आगरा
8. अनुवाद, दिल्ली
9. छत्तीसगढ़ केसरी, भिलाई
10. हरिभूमि, रायपुर
11. अमृत संदेश, रायपुर
12. दैनिक भास्कर, रायपुर
13. साप्ताहिक हिंदुस्तान, नई दिल्ली

वेबसाइट :–

- cgswar.blogspot.com/Rameshchandramehrotra
- saahityalochan.blogpot.com
- archive.org/detail/bolteshabd
- hindimedia.com/rameshchandramehrotra
- hindiblog.org
- hi.wikipedia.org

शोध–निर्देशक

डॉ0 सुधीर शर्मा विभागाध्यक्ष (हिंदी)
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय
भिलाई नगर, जिला–दुर्ग (छ.ग.)

शोधार्थी

अमित कुमार पटेल
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय
भिलाई नगर, जिला–दुर्ग (छ.ग.)

प्राचार्य
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय
भिलाई नगर, जिला–दुर्ग (छ.ग.)